

21 जब शिक्षक एक सुगमकर्त्ता होता है

निशा बुटोलिया

मैंने दो प्राइवेट स्कूलों में तीन–तीन साल तक प्राथमिक शिक्षक के रूप में काम किया है। इन दोनों स्कूलों में सभी शिक्षकों को मुम्बई के एक शैक्षणिक सलाहकार श्री रसिक भाई शाह के मार्गदर्शन में अध्ययन–प्रसंग (थीम) आधारित अध्ययन–अध्यापन प्रक्रिया का अनुसरण करने के लिए उपयुक्त सहयोग दिया गया। इस अध्यापन प्रक्रिया में अवधारणा और कौशल किसी एक थीम के आसपास केन्द्रित होते हैं। शिक्षक के सामने यह चुनौती भी होती है कि वह अपने पाठ्यक्रम को इस थीम से जोड़े।

हालाँकि अध्ययन–प्रसंग आधारित शिक्षण का पूरा विचार नूतन प्रयास है और हमने जिन गतिविधियों की योजना बनाई वे हमेशा ही रोमांचक होती थीं, लेकिन एक खास अनुभव अत्यधिक रोमांचित करने वाला था और उसे मैं आप सबके साथ बाँटना चाहूँगी।

कक्षा 3 के बच्चे 'मैं' अध्ययन–प्रसंग पर काम कर रहे थे। यह फरवरी 2009 के प्रारम्भ की बात है और मुझे गणित में द्रव्यमान, आयतन और लम्बाई के विषय–प्रसंगों (टॉपिक्स) को, साथ ही भाषा तथा ई.वी.एस. के अन्य विषय–प्रसंगों को पूरा करना था। भाषा और ई.वी.एस. की अवधारणाओं को पढ़ाना आसान था क्योंकि मैं इस विषय पर आधारित अनेक गतिविधियों की योजना बना सकती थी। मैं इसलिए परेशान हो रही थी, क्योंकि उन गतिविधियों को सोच पाना मुश्किल था जो इन सब विषयों – ई.वी.एस., भाषा और गणित की ऊपर उल्लिखित अवधारणाएँ– को एक साथ बाँध पातीं।

मैंने बहुत सोचा....इन शब्दों (द्रव्यमान, आयतन और लम्बाई) को सोचते हुए, मेरे आँखों के सामने निरन्तर तराजू की तस्वीर तस्वीर नाचती रही; पर उसका करना क्या था? क्या मैं अपने बच्चों को किसी दुकान पर ले जाऊँ, जहाँ वे देख पाएँगे कि चीजें कैसे तौली जाती हैं, तरल पदार्थों को कैसे मापा जाता है? पर ये सब तो वे रोज देखते हैं। इस अनुभव को नया और रोचक बनाने के लिए क्या किया जा सकता था? और सिर्फ दुकानदार को ही देखते रहना कोई बहुत रोमांचक बात नहीं है। क्या वह मेरे बच्चों को तराजू छूने और उससे वजन करने देगा? पर आखिर कितने बच्चे उसका इस्तेमाल कर पाएँगे – सभी 30 विद्यार्थी? हर बार उसी चीज को दोहराते रहना?...उबाऊ...। ये सब विचार मेरे दिमाग में घूमते रहे।

इसी बिन्दु पर मुझे यह रोचक विचार सूझा – क्यों न मेरे बच्चे अपना तराजू, बाट, और तरल पदार्थों को मापने के लिए पात्र बनाएँ? ये हुई न बात!

मैंने अपने बच्चों से कहा कि हम दो दिन बाद दुकानें लगाएँगे और दूसरी कक्षाओं के शिक्षकों और विद्यार्थियों को वस्तुएँ बेचेंगे। उन्होंने मुझसे बहुत सारे सवाल पूछना शुरू कर दिए, खुद ही कुछ सवालों के जवाब भी देने लगे और मुझे सुझाव देने लगे हमें इसे कैसे करना चाहिए।

हमने धीरे–धीरे आगे बढ़ना शुरू किया – वे सभी किलोग्राम (किग्रा.), ग्राम (ग्रा.), लीटर (ली.), मिलीलीटर (मिली.), मिलीमीटर (मिमी.), सेन्टीमीटर (सेमी.) और मीटर (मी.) से परिचित थे। थोड़ा दोहराव जैसा करने के बाद हम पत्थरों को इकट्ठा करने गए जिन्हें बच्चे तौल के बाटों की तरह इस्तेमाल करने वाले थे। इसके बाद हम मैदान में एक बड़ा गोला बनाकर बैठ गए। फिर प्रत्येक बच्चे ने अपने पत्थर दिखाए। उन्होंने पत्थरों पर 1 किग्रा., 500 ग्रा., 250 ग्रा., 50 ग्रा. आदि के लेबल लगा दिए। मैंने पत्थरों के आकारों पर नजर बनाए रखी – बहुत जल्दी ही उन्हें यह एहसास हो गया कि उनके पत्थरों के सापेक्षिक आकार और उनके द्वारा दर्शाई जाने वाली मात्रा में मेल होना चाहिए। उन्होंने

अपने साथियों से सीखा, एक–दूसरे की मदद की, अपनी गलतियों को सुधारा और ज्यादा चिकने पत्थरों की तलाश की।

हम वापस कक्षा में गए। साथ मिलकर, हमने तराजू बनाने के तरीकों के बारे में सोचा। हमने योजनाओं का आदान–प्रदान किया...सभी की योजनाएँ बहुत अच्छी थीं! उन्होंने मिट्टी की थालियों, स्टील की थालियों, कपों, पेपर थालियों, पत्तियों, डंडियों, लोहे की छड़ों, धागों आदि के उपयोग की सलाह दी।



मैंने उनसे उन वस्तुओं के बारे में सोचने के लिए कहा जिन्हें वे बेचना चाहते हों: एक वस्तु को एक ही बार बेचा जा सकता था। यहाँ पर, कुछ बच्चों ने कहा कि वे तेल बेचेंगे। मैंने कहा कि मुझे रस्सी की जरूरत है, क्या कोई उसे बेचने के लिए इच्छुक है? तुरन्त ही 5–6 हाथ खड़े हो गए। यहीं पर मुझे लम्बाई, द्रव्यमान और आयतन के बीच के अन्तर को तथा हम इन्हें कैसे माप सकते हैं, इन बातों की चर्चा करने का मौका मिला। हम सभी ने सम्भावित तरीकों के बारे में सोचा। तरल पदार्थों को मापने के लिए पात्रों को चुना और गहराई को मापने के लिए हमारे पास मीटर मापक थे।

फिर हम लोगों ने इस बात पर चर्चा की कि इस गतिविधि को अन्य कक्षाओं के बच्चों और शिक्षकों के लिए किस तरह रोचक बना सकते थे? हमने सोचा कि हम उन वस्तुओं का विज्ञापन करेंगे जिन्हें हम बेचने वाले थे। एक बार फिर, विज्ञापनों के लिए भी दस अलग–अलग विचार सामने आए – कागज पर लिखने के लिए नारे, जोर–जोर से बार–बार दोहराने के लिए नारे, कुछ प्रतिरूप आदि।

अगले दिन हम सभी ने अपनी दुकानों की तैयारी की। मैंने छोटी–छोटी चीजों जैसे मेजें लगाने, उनके नारों को संवारने, उनके विज्ञापनों को चिपकाने में उनकी मदद की और साथ ही मैं उनके सुझावों का भी अनुसरण करती जा रही थी।



इसके अगले दिन, हम अपनी दुकानों को लगाने की तैयारी से स्कूल पहुँचे।

सभी मेजों को दीवारों के समानान्तर लगा दिया गया। मेजों के सामने, मैंने सुन्दर नारे और विज्ञापन देखे – '2 किलो दाल खरीदें और 1 किलो मुफ्त पाएँ', 'बालों के लिए, खाना बनाने के लिए, त्वचा के लिए तेल; खरीदें और सेहतमन्द हो जाएँ'। ये मौलिक नारे थे, उनके खुद के। उनमें से कुछ ने कागज के थैले भी बनाए क्योंकि उनका कहना था कि हमें अपने पर्यावरण को स्वच्छ रखना जरूरी है।

मेरे प्यारे छोटे बच्चों में जबरदस्त उत्साह था; अपनी दुकानें लगाते हुए, वे इतने व्यस्त थे, नए–नए विचार सामने आ रहे थे और मैं वहाँ खड़ी हुई उन्हें निहार रही थी, बिलकुल अवाक!

अब दूसरे शिक्षक एक–एक करके अपने–अपने विद्यार्थियों के साथ वहाँ आए। उन्होंने बच्चों से उन्हें 3 किग्रा. आलू देने को कहा, बच्चों के साथ मोल–भाव किया, छुट्टे पैसे

माँगे और मेरे नन्हे बच्चे फिर एक बार हिसाब–किताब करने में लग गए। और हाँ, उन्होंने कागजों से भी पैसा बनाया! दूसरी कक्षाओं के लोग आए, उनके शिक्षकों ने मेरे बच्चों से पैसों पर, द्रव्यमान, आयतन, इकाइयों के परिवर्तनों, गाजरों के उपयोगों आदि पर सवाल पूछे। एक किग्रा चावल कितना होता है? अगर मैं सवा किलोग्राम खरीदूँ तो?

मेरे कुछ बच्चे हैरान–परेशान दिखाई दिए, कुछ आश्वस्त दिखे – पर कोई भी वहाँ से हटा नहीं। वे "ग्राहकों" के सवालों के जवाब देते गए।

एक शिक्षक ने अँग्रेजी में बात कर पाने के लिए मेरे बच्चों की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि वे धाराप्रवाह अँग्रेजी बोल पा रहे थे। मुझे बहुत खुशी हुई और गर्व का एहसास हुआ! पर मैं सोच में पड़ गई कि वे बच्चे जो अटक–अटककर अँग्रेजी बोलते थे, अचानक से क्या इसलिए धाराप्रवाह बोलने लग गए क्योंकि उन्हें बात करने के लिए एक खास सन्दर्भ मिल गया था।

लगभग 2 घण्टे बाद, जब लगभग सभी प्राथमिक कक्षाएँ हमारी दुकानों पर आकर जा चुकी थीं, हमने 'दुकान बन्द' का बोर्ड सामने लगा दिया। मेरे बच्चे थके तो लग रहे थे, लेकिन अभी भी उत्साह से भरे हुए थे।

हम सभी ने देखा कि दालों और अनाज के दाने पूरे फर्श पर बिखरे हुए थे। अब क्या किया जाए? हमने सोचना शुरू किया। फिर मैंने एक योजना उनके सामने रखी – क्या हम इन्हें बटोरकर कूड़ेदान में फेंक दें? वे सभी चिल्लाए, "नहीं!" (हमने पिछले अध्ययन–प्रसंग में 'हम जो खाना खाते हैं' के बारे में चर्चा की थी)। फिर हम सभी ने कुछ ऐसा करने का सोचा जो उपयोगी रहे। एक बच्चे ने सुझाव दिया कि हम इन सारे दानों को उठाकर वापस घर ले जाएँ। कुछ देर सोचने के बाद, हमने तय किया कि हम उन दानों को बगीचे में बो देंगे। हम सभी ने फर्श पर बिखरे हुए दानों को इकट्ठा करना शुरू किया, बगीचे में गए, जमीन में गड्ढे किए, उनमें बीज बोए और अपनी पानी की बोतलों से उन भावी पौधों में पानी दिया।

रोज हम यह अपेक्षा करते थे कि उन बीजों में से कुछ निकलेगा और एक दिन, ऐसा हुआ। यह वाकई में एक उपलब्धि थी!

दानों को बोने के बाद जब हम कक्षा में वापस गए, तो मैंने सुझाव दिया कि हम सभी को इस गतिविधि के बारे में लिखना चाहिए – कैसे हमने इसकी योजना बनाई, क्या–क्या तैयारियाँ की गईं, उन्हें कैसे अंजाम दिया गया, लोगों से बात करने के अनुभव और कुल मिलाकर उन्हें इन गतिविधि को करके कैसा महसूस हुआ।

बच्चों ने 2–3 पूरे पन्नों की रिपोर्ट लिखी – कक्षा 3 के बच्चे! मैं तो बिलकुल ही चकित रह गई! जब उनसे दूसरे दिए गए विषयों पर लिखने के लिए कहा जाता था तो वे एक या दो पैराग्राफ लिखा करते थे, पर आज तो वे लिखते ही चले गए... अपने शब्दों में... कोई बहुत धाराप्रवाह अँग्रेजी में नहीं..., लेकिन मेरा यकीन मानिए, वह उनकी योजनाओं, तैयारियों और उनकी कड़ी मेहनत के बारे में किया गया एक मौलिक और सटीक चिन्तन था। उन्होंने मुझसे कई सवाल पूछे – मुख्यत: हिन्दी और गुजराती शब्दों के अनुवाद पर और कभी–कभी वाक्य संरचनाओं को लेकर। मुझे एहसास हुआ कि ये बच्चे तो बहुत होशियार हैं; पहले मैं ही गलती कर रही थी। मैंने इन बच्चों को लिखने के लिए उपयुक्त सन्दर्भ नहीं दिया था।

मूल्यांकन

हम सतत समग्र मूल्यांकन (सी.सी.ई.) को अपनाया करते थे। मेरे बच्चों को हमेशा ही यह बात पता थी कि उनकी शिक्षक निश्चित ही चीजों का रिकार्ड बनाए रखेंगी। मुझे अपने बच्चों के साथ अपने अवलोकनों को साझा करने में कोई दिक्कत नहीं थी।

मेरे पास अँग्रेजी भाषा के विभिन्न पहलुओं – शब्दावली, व्याकरण, स्पेलिंग, लिखावट, सृजनात्मक लेखन – का मूल्यांकन करने के लिए मेरे बच्चों की रिपोर्टें थीं, और साथ ही मैंने उन अवलोकनों का भी रिकार्ड रखा हुआ था जब अन्य शिक्षकों और विद्यार्थियों के साथ उनका वार्तालाप होता था।

गणित के लिए, मैं हर मेज पर गई और उनसे किलोग्राम को ग्राम में, मीटर को सेन्टीमीटर में, लीटर को मिलीलीटर में परिवर्तित करने के, और इसी से मिलते–जुलते अन्य उचित प्रश्न पूछे।

ई.वी.एस. के लिए, प्रश्नों और उत्तरों के लिए कोई बहुत गुंजाइश नहीं थी, पर मैं पर्यावरण के प्रति उनकी संवेदनशीलता से जुड़े पहलुओं पर अपने अवलोकन दे सकी।

टिप्पणी– मूल्यांकन के ये सभी मापदण्ड सी.बी.एस.ई. के मानकों के अनुरूप हैं।

चिन्तन

जब मैंने बैठकर इस पूरे अनुभव के बारे में विचार किया, तो मुझे लगा कि मैंने किया क्या था? इस सबमें मेरी क्या भूमिका थी?

मेरे बच्चों ने बाट तैयार किए थे, उन्होंने ही दुकानें तैयार की थीं, उन्होंने सवाल उठाए थे, उन्होंने मेरी मदद माँगी थी, उन्होंने ही तमाम सुझाव सामने रखे थे।

वे सब कुछ सीख गए थे – पैसे, द्रव्यमान, आयतन, लम्बाई, अनाजों, दालों, सब्जियों के उपयोग के बारे में और ज्यादा बातें। उन्होंने नारे तैयार किए थे, उन्होंने शिक्षकों और विद्यार्थियों से अँग्रेजी में बात की, उन्होंने लोगों द्वारा पूछे जाने वाले सवालों को ठीक–ठीक समझा, उन्होंने रिपोर्टें लिखीं, उन्हें प्लास्टिक के बजाय कागज के थैलों के उपयोग का महत्व समझ आया, हमने कक्षा की सफाई की और कुछ अंकुर बोए।

गणित, ई.वी.एस., भाषा – मुझे लगा कि यह एक परिपूर्ण कक्षा थी!

हाँ, मैंने उनकी सहायता की और उन्हें प्रोत्साहन दिया। मैंने उन्हें मौका दिया। उन्होंने सारा काम किया, मैंने सिर्फ चिंगारी को हवा दी, मैं सुगमकर्त्ता हो गई थी!



__निशा__ बुटोलिया अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, बंगलौर में भाषा टीम की सदस्य हैं। वे कई वर्षों तक प्राथमिक विद्यालय में शिक्षिका एवं अकादमिक समन्वयक रही हैं। थीम आधारित अध्ययन–अध्यापन प्रक्रिया पर भी उन्होंने लम्बे समय तक काम किया है। उनसे nisha@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।
__अनुवाद__ : भरत त्रिपाठी